विकल्प

गुरुवार, 20 अगस्त 2026

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के विद्यार्थियों का प्रायोगिक पत्र

समापन सत्र के अतिथि

रजनीश कुमार अग्रवाल
सांसद, राज्यसभा

एमसीयू में खुली दुर्गेश के दिल की 'गुल्लक'

वहां तेरी नाल गड़ी है...गांव की ओर लौटना होगा

अपनी भाषा और संस्कृति पर घमंड करना चाहिए, वही आपको आगे बढ़ाएगी

हिंदी भाषी घरों में दर्शकों के सिर चढ़कर बोल रहे ओटीटी प्लेटफॉर्म के धारावाहिक 'गुल्लक' के पटकथा लेखक दुर्गेश सिंह, संजय लीला भंसाली के साथ लोकजीवन से जुड़ी एक फिल्म बनाने जा रहे हैं जिसकी थीम है- वहां तेरी नाल गड़ी है। गांव की ओर लौटना होगा।

बचपन में सुनी कहानियों का आपके जीवन में बहुत महत्व है। वर्तमान समय उन माइथोलॉजिकल कहानियों का है जिसे आपके दादा-नाना सुनाया करते थे। वे कहानियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। ऐसी ही एक कहानी 'गुल्लक' ने मेरी जिंदगी बदल दी।

मैं खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ क्योंकि आप जहाँ से यात्रा कर रहे हैं वहीं से मैं भी निकला हूँ। आपको अपनी भाषा और संस्कृति पर सदैव घमंड करना चाहिए क्योंकि यह चीजें आपको आगे ले कर जाती हैं।

लाइट कैमरा एक्शन

वर्ल्ड फोटोग्राफी डे पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कैमरा थामा और विद्यार्थियों को कैमरे के तकनीकी गुर सिखाए। इसमें उन्होंने बच्चों से अपर्चर, एक्सपोजर , एंगल और कंपोजिशन पर बात की।

4 महादेशों के 7 शहरों से जुड़े पूर्व विद्यार्थी

अभ्युदय 2026 के दूसरे दिन विदेशों के विभिन्न मीडिया संस्थानों और क्रिएटिव फील्ड में सक्रिय पूर्व विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। उन्होंने नवागत विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और उन्हें अपने फील्ड अनुभवों से अवगत कराया।

• **तारिका भेड़ा** -एमसीपीआर, 1998–2000; कैलिफोर्निया,अमेरिका • **विनोद नागर**- एमए, एपीआर, 2002–04; दुबई, संयुक्त अरब अमीरात, • **सुमित रंजन** - एमएएमसी, 2011–13; प्राग, चेक गणराज्य हिंदी भाषा विशेषज्ञ, अमेज़न • **एन. हरि प्रकाश**-बी.टेक. (प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग), 2023–26; मॉडर्न लिथोग्राफिक, नैरोबी, केन्या • **मंतोष सिंह** - बी.टेक. (प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग), 2013–17; अरेबियन फ्लेक्सिबल पैकेजिंग, दुबई • **नेहा सूर्यवंशी** - बी.एससी. (मल्टीमीडिया), 2016–19; विजुअल प्रोड्यूसर, लंदन • **शादाब आलम** -बी.टेक. (प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग), 2013–17; नेशनल पेंट्स, सऊदी अरब • **आशीष सिंह**- बी.टेक. (प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग), 2018–22; यू-फ्लेक्स असेप्टो, मिस्र • **संजय सहानी**- बी.टेक. (प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग), 2017–20; इको पैकेजिंग, यूनाइटेड किंगडम

सात विद्यार्थियों को सम्मान

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय,भोपाल के अभ्युदय 2026 में दूसरे सत्र के दौरान सात मेधावी विद्यार्थियों को प्रावीण्यता प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

- शैल्या शर्मा 6 BAMC (H)
- अंजली 4MSc (NM)
- दीक्षा मन्नासे 8 BSc(MM)(H)
- अमित पांडे 2 MA (MC)
- मानसी काले 6 Bsc(MM)(H)
- नरेश नागर 2(MCA)
- आदित्य कुमार चौरसिया 6 BSC FCS (H)

प्रथम सत्र

अपनी आवाज़ को कभी खोने नहीं देना

दुर्गेश सिंह, 'गुल्लक' के लेखक

मैं जहाँ से निकला वहीं यात्रा करते हुए गर्व हो रहा है।,आपको अपनी भाषा, जमीन पर सदैव घमंड करना चाहिए क्योंकि यह चीजें आपको आगे ले कर जाती है। आजकल बहुत प्रयोग हो रहे हैं। ह्यूमन ब्रेन और आपको कोई रिप्लेस नहीं कर सकता, आपको ए आई के टूल्स का प्रयोग करना आना चाहिए। वर्तमान समय उन पौराणिक कहानियों का है। जिसको आपके दादा, नाना सुनाया करते थे, वे कहानियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

सत्य ही पत्रकारिता की विचारधारा

पंकज झा , छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के मीडिया सलाहकार

सत्य की विचारधारा का साथ देना चाहिए। सच्चाई और विश्वसनीयता का दामन कभी नहीं छोड़ें, भले ही लगे कि शॉर्टकट में आपको उसका नुकसान हो रहा है लेकिन लंबे समय में यही साथ रहती है। आप एआई का उपयोग करें। एआई को अपना उपयोग मत होने दें। खूब पढ़ें। पढ़ी गई चीजें और सीखे गए स्किल, इसके अलावा और कुछ भी काम नहीं आना है। पढ़ने का कोई विकल्प नहीं है, आप सिर्फ तीन काम करिए जो कि है पढ़ना , पढ़ना और पढ़ना।

दो वक्ता ONLINE

जमाने का ट्रेंड पकड़ लो

संजय सलिल, मीडिया गुरु के संस्थापक

हम इंजीनियरिंग, डॉक्टरी जैसे कोर्सेस का लोभ छोड़कर पत्रकारिता में आए तब पता भी नहीं था कि यह क्या होती है। शिक्षकों ने हमें जीवन के लिए तैयार किया।

पत्रकारिता निरंतर सीखने का विषय

सुधा राय, चैक गणराज्य

जिज्ञासु रहिए, सवाल कीजिए और नई तकनीकों को सीखते रहिए। पत्रकारिता केवल अकादमिक विषय नहीं है बल्कि ये लोगों से निरंतर सीखने का विषय है।

रियाज करने से ही सफलता

प्रसून मिश्रा, एडिटर, डीबी डिजिटल, भोपाल

आप चाहे प्रबंधन, पत्रकारिता या संचार किसी भी विभाग से हों प्रोफेशनल फील्ड के अनुसार समझ विकसित करनी चाहिए। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि अगले दो साल में क्या करना है और भविष्य में खुद को कहां देखना है। अगले पांच दस साल में क्या बनना चाहते हैं यह समझने के लिए अपने विषय को समझने का तरीका विकसित करना जरूरी है। इसके बाद जरूरी है कौशल जिसके लिए रियाज़ करना होगा। जब आप किसी मुकाम पर पहुंच जाते हैं तो अपनी स्थिति को बरकरार रखने में आपका रवैया (एटीट्यूड) काम आता है।

कैंपस था या कोई आकाशगंगा

रवि मिश्रा, सीनियर एंकर व डिप्टी न्यूज़ एडिटर, टीवी 9 भारतवर्ष

पत्रकारिता में संसाधनों का अपना महत्व होता है, लेकिन उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण वे वैल्यूज़ हैं, जो एक पत्रकार अपने सफर के दौरान अर्जित करता है। यह हमेशा साथ रहते हैं। संसाधनों की एक टाइमलाइन होती है, लेकिन वैल्यू की कोई टाइमलाइन नहीं होती। नया करने से नए वैल्यूज जुड़ते हैं। हम चले और आगे बढ़े क्योंकि हमारे साथ एक उम्मीद थी कि एक दिन स्थान बनाएंगे।

असफलताओं से घबराना नहीं

अजीत झा, बिजनेस एनालिसिस डायरेक्टर, तवानिया

हम सब समान नहीं हैं। किसी में कुछ तो किसी विद्यार्थी में कुछ विशिष्टता है। क्या करना है, यह सभी बताते हैं, क्या नहीं करना है,वह मैं करता हूं। गूगल आपको सिर्फ जानकारी दे सकता है, लेकिन गांव से अंतरराष्ट्रीय कंपनी तक यूनिवर्सिटी और शिक्षक ही पहुंचाते हैं। असफलताएं मिलेंगी, पर उनसे घबराना नहीं है।

अवसर को पहचानना चाहिए

मीनाक्षी शर्मा, डिप्टी बिजनेस एडिटर टाइम्स ऑफ इंडिया

करियर किसी डेज़िग्नेशन से नहीं बनता, हार्ड वर्क, फेलियर, रीजेक्शन से बनता है। जब हम यूनिवर्सिटी में थे, तब हम प्रैक्टिकल के लिए विकल्प न्यूज़पेपर निकालते थे, फील्ड में जाकर खबर लाते थे, एडिटिंग करते थे और लेआउट डिजाइन कर निकालते थे। हमारी टीम होती थी। बैठकर टीमवर्क के साथ काम करते थे और यहीं से मैंने टीमवर्क करना सीखा। हमारे अंदर 'न्यूज़स्टोरी फॉर आई' होनी चाहिए। अवसर को पहचानना आना चाहिए।

रिपोर्टिंग प्रथम सत्रः ऋषिका सिंह , छवि बाथम, हिमांशु तिवारी (3BAJCW), श्रद्धा दुबे, अंजली रावत, उत्सव झा, अदिति सिंह,अनुपम वर्मा (1BAJCW), अनुष्का पांडे , झ़रना सोनी (5BAMC)

द्वितीय सत्र

शून्य से शुरू किया था यह सफर

नील रुद्रजीत मुखर्जी, संस्थापक, यंग मोंक फिल्म्स

मैंने झारखंड के एक छोटे से गाँव से आकर यह सफर शुरू किया। विश्वविद्यालय में आने से पहले मैं नए विचारों के स्तर पर पूरी तरह शून्य था। मैंने एजुकेशन लोन लेकर अपनी पढ़ाई शुरू की थी। विश्वविद्यालय के माहौल ने मुझे आत्मविश्वास दिया। आज हर युवा के पास कोई न कोई स्किल है, लेकिन केवल स्किल होना पर्याप्त नहीं है। इसके साथ कम्युनिकेशन और कॉन्फिडेंस भी जरूरी हैं। किसी भी क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति को अपनी बात प्रभावी ढंग से सामने रखना आना चाहिए। अपनी क्रिएटिविटी और प्रोफेशनल स्किल के साथ नई तकनीक को समझना भी जरूरी होगा।

सिर्फ अंकपत्र ही नहीं, व्यक्तित्व पर भी ध्यान दें

मिताली उपाध्याय, पैकेजिंग इंजीनियर, वॉल्वो आयशर

आवश्यक नहीं कि जीवन में सब कुछ आपके अंकपत्र और तय करिकुलम से ही निर्धारित हो। इसके बाहर मिलने वाले अवसर आपके करियर को नया रंग दे सकते हैं। विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली ऐसी गतिविधियों में भाग लेना और वॉलंटियर करना भी महत्वपूर्ण होता है। विभाग की ओर से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतिभा की डिबेट में शामिल होना मेरे लिए काफी उपयोगी रहा। जटिल विषयों को सरल शब्दों में प्रस्तुत करना सबसे बड़ी चुनौती होती है। जहाँ तक मेरे फील्ड का सवाल है, अपने अनुभवों से यह कह सकती हूँ कि प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी केवल अख़बार तक सीमित नहीं है। इसमें मशीन, गुणवत्ता और प्रबंधन तीनों विधाएँ शामिल हैं।

हमारा ऑर्डिनरी, दुनिया के लिए एक्स्ट्राऑर्डिनरी

ओम प्रकाश रजक, संस्थापक, अलेक्स मीडियाटेक

हमारा जो ऑर्डिनरी है, वह बाहर के लिए एक्स्ट्राऑर्डिनरी हो जाता है। यह ताकत हमें विश्वविद्यालय से मिलती है। मैंने बतौर ग्राफिक डिज़ाइनर काम करना शुरू किया। उसके बाद कंटेंट राइटिंग, मीम्स और वीडियो में भी काम किया। एक साल के अंदर ही मेरी तनख्वाह छह गुना हो गई थी। विश्वविद्यालय में मिले प्रैक्टिकल ज्ञान ने मेरे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी तैयारी रखिए कि आप उद्योग जगत को अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकें। जितना ज़्यादा देंगे, उतना ज़्यादा मिलेगा। आज के दौर में न्यू मीडिया की खासियत है कि यहाँ बताया नहीं जाता कि काम कैसे करना है, बल्कि हमें नए तरीकों से खुद काम करके सीखने का मौका मिलता है।

बेस्ट नहीं, हर बार बेहतर कर सकते हैं

सुधांशु शेखर, संस्थापक, ओम तत्व डिजिटल

इस विश्वविद्यालय में एक खाली सपना लेकर आया था। मुझे भी यह उलझन होती थी कि मैं कैसे कर पाऊँगा? 'ये जवानी है दीवानी' फिल्म के एक किरदार से प्रेरित होकर फिल्म निर्माण करना चाहता था। दुनिया घूमने का सपना देखता था, लेकिन कैमरा, एंगल, लेंस और सेंसर जैसी तकनीकी चीज़ों से पूरी तरह अनजान था। मुझे मेरे शिक्षकों ने बहुत कुछ सिखाया, विभाग की लैब में सीखा और सीनियर्स से भी सीखा। आप सभी एक बात हमेशा ध्यान रखें कि "हमारा कोई भी काम हमारा बेस्ट नहीं होता, हम हर बार और बेहतर कर सकते हैं।"

एआई को अपना हथियार बनाएं

ललित कुमार, सूचना सुरक्षा विशेषज्ञ, भारत सरकार

आप सभी इस क्षेत्र में नए हैं। अपने काम में महारत हासिल करें और उसके बाद एआई की मदद से अपने काम को और बेहतर बनाएं। आप लोग एआई को बैसाखी नहीं, अपना हथियार बनाएं। विद्यार्थियों को हमेशा दूसरों से आगे निकलने का प्रयास करना चाहिए। नए विद्यार्थियों को अंग्रेजी के साथ-साथ जर्मन, फ्रेंच और स्पेनिश जैसी अलग-अलग भाषाएँ सीखनी चाहिए। भाषाओं का ज्ञान आपके लिए नए अवसरों के द्वार खोल सकता है। केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, आपको यह भी जानना चाहिए कि पढ़ाई किस तरीके से की जाए।

तृतीय सत्र

एमसीयू के डिप्लोमा ने बदली मेरी जिंदगी

सुशील अग्रवाल, संस्थापक, मध्या एडवरटाइजिंग प्राइवेट लिमिटेड

संघर्ष, मेहनत और हिम्मत से ही व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। मेरे मन में था कि मुझे काम करने वाला नहीं, काम देने वाला बनना है। मैंने अपने व्यवसाय को साढ़े तीन हजार की नौकरी से शुरू करके 60 करोड़ की कंपनी तक पहुँचाया है। जब तक मुझे सफलता नहीं मिली, तब तक मैं लड़ता रहा। मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा मेरी पत्नी बनीं। माखनलाल विश्वविद्यालय के एक वर्षीय डिप्लोमा ने मेरी जिंदगी बदल दी, यह मेरा प्रारब्ध था। मैं अपनी इस सफलता का श्रेय विश्वविद्यालय को देता हूँ।

एक स्किल पर आश्रित न रहें

शिखा शर्मा, सीनियर मैनेजर, लोकलाइजेशन सर्विस, मैग्नन ग्रुप

आज के बढ़ते दौर में आप एक स्किल पर आश्रित नहीं रह सकते। आपको ग्राफिक्स, ए.आई., वीडियो एडिटिंग, एडवरटाइजमेंट मेकिंग सीखना चाहिए। स्थानीय भाषा पर अपनी पकड़ बनाएँ, ताकि टारगेट ऑडियंस तक आपका संदेश पहुँच सके। यदि कोई ग्लोबल कंपनी अपना प्रोडक्ट भारत में उतारे और उसकी टैगलाइन हो 'इट विल एन्हांस योर थैंक्सगिविंग डिनर टेबल', तो उसका लोकलाइजेशन भारत की संस्कृति के अनुरूप करना होगा। आज के दौर में एआई का भी लोकलाइजेशन हो रहा है। भाषा कौशल विकसित करना आवश्यक है।

अपनी रुचि को पहचानना ज़रूरी

अपर्णा झा, सहायक संपादक, मिंट (हिंदुस्तान टाइम्स)

पत्रकारिता में करियर और सफलता के लिए अपनी वास्तविक रुचि को पहचानना सबसे ज़रूरी है। पढ़ाई के साथ दुनिया को देखें, समझें और आँकड़ों की अहमियत को पहचानें। शुरुआत में हर अवसर को अपनाइए, भले ही वह आपकी पहली पसंद का काम न हो। लड़कियों को इस क्षेत्र में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, इसलिए खुद को सजग और मजबूत रखें। मोबाइल को किनारे रखकर लोगों से मिलें, खूब पढ़ें और एआई का इस्तेमाल खुद को सशक्त बनाने के लिए करें, न कि उसे खुद पर हावी होने दें।

हर संघर्ष कुछ नया सिखाता है

कुलगुरु ने सुनाए अपने पत्रकारिता के संस्मरण

मेरी पत्रकारिता की शुरुआत में जितना मासिक वेतन था, वह मेरे लिए शर्म की बात थी। ट्यूशन पढ़ाने के दौरान जितना कमाता था, वहाँ तक पत्रकारिता में पहुँचने में दस वर्ष लग गए। इसी उधेड़बुन में एक दिन, जब अमृतसर 57 डाउन से विदिशा लौट रहा था, तब मैंने विचार किया कि अब पत्रकारिता नहीं करूँगा, अपने गाँव लौट जाऊँगा। लेकिन घर पर ऐसी स्थिति बनी कि पुनः इसी क्षेत्र में लौटना पड़ा।बाद में फ्री प्रेस हिंदी में संपादक रविंद्र शाह के पास एक सप्ताह तक नौकरी के लिए रुका। कुछ दिन बाद पता चला कि वह अख़बार बंद होने वाला है। फिर दूसरे अख़बार में बिजनेस पेज पर काम करने को मिला। लेकिन डेढ़ महीने बाद इस नौकरी को अलविदा कहना पड़ा, क्योंकि मेरी वजह से एक बुजुर्ग की नौकरी चली जाती। खैर, इसके बाद नईदुनिया से जुड़ा और यह सफर आगे बढ़ता चला गया।तो मेरा यह कहना है आप सभी से कि हर संघर्ष आप सभी को कुछ नया सिखाता है और आपके जीवन को समृद्ध करता है।

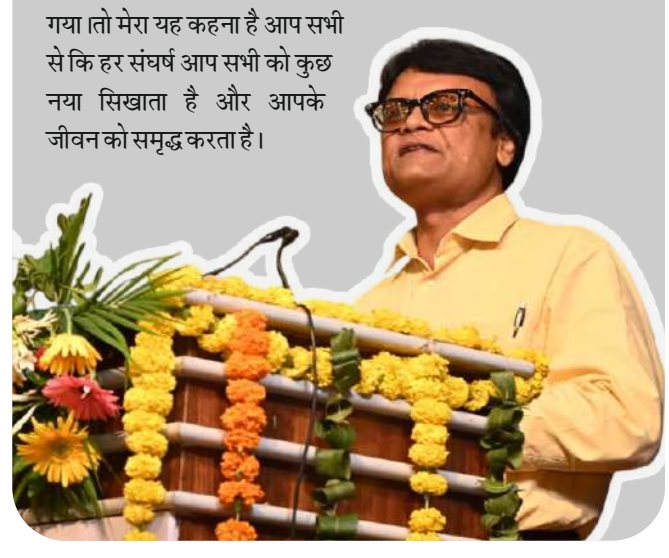

रिपोर्टिंग द्वितीय सत्र : सृष्टि राय,प्रियंका लोधी(5BAJCW), कशिश गंगवार, शौर्वी श्रीवास्तव, सृष्टि सक्सेना (3BAJCW), श्रद्धा चौहान (3BAMC)
रिपोर्टिंग तृतीय सत्र : केवली जैन (5BAMC), छवि बाथम (BAEJ3), वरुण, निखिल शर्मा (3BAJCW)

चतुर्थ सत्र

बिना स्वतंत्र विचारों के संभव नहीं है पत्रकारिता

आनंद पाण्डेय
संस्थापक व प्रधान संपादक, द सूत्र

हम खंडित हो चुके हैं, यानी कि "मनसा, वाचा, कर्मणा" से हम सभी अलग-अलग हो गए हैं। पढ़िए, सोचिए और सवाल कीजिए, तभी सही पत्रकारिता शुरू होगी। ज्ञान के लिए किताबें पढ़ें और अधिक ज्ञान हासिल करने के लिए उन लोगों से मिलें, जिनके पास अनुभव है। अगर पत्रकारिता में आपका स्वतंत्र विचार नहीं है, तो पत्रकारिता की कोई भी स्ट्रीम आपके लिए नहीं है। कंटेंट क्रिएशन में लोग सिर्फ सूचना दे सकते हैं, लेकिन सोचने का काम पत्रकार ही कर सकता है। नैरेटिव गढ़ना आसान है, लेकिन पत्रकार को सोचना आना चाहिए। आप सभी लोग प्रमाणिकता, ईमानदारी और क्रिटिकल थिंकिंग विकसित करें।

मौलिक और सृजनात्मक बनो

हमारे निमाड़ में एक कहावत है कि "घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव में सिद्ध।" विश्वविद्यालय के सत्रारंभ में पहली बार पूर्व विद्यार्थियों को बुलाकर इसे गलत साबित कर दिया गया। यहाँ इस विश्वविद्यालय में हमें किताबों के साथ-साथ व्यवहार, अनुभव और विचारों से पढ़ाया गया है। कला पत्रकारिता बहुत कठिन नहीं है, यह बहुत ही रोचक होती है। अगर आपके भीतर शब्दों को गढ़ने की क्षमता है, तो आप पत्रकारिता में बहुत अच्छा काम कर सकते हैं।

कला का क्षेत्र बहुत ही व्यापक और विस्तृत है। डरे नहीं और बढ़-चढ़कर अपनी कला का प्रदर्शन करें। आप लोगों को एआई के भरोसे नहीं रहना चाहिए। आप सदैव अपनी मौलिकता और सृजनात्मकता को बनाए रखें। एआई आपका सहायक है और नायक आप ही हैं।

मीडिया में माध्यम बदलेंगे, सिद्धांत नहीं

वर्ष 2007 में अमर उजाला में जूनियर रिपोर्टर के तौर पर मैंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा। बाद में दैनिक भास्कर से जुड़ा और डिजिटल पत्रकारिता में अपने करियर को आगे बढ़ाया। उज्जैन सिंहस्थ में सवा महीने रिपोर्टिंग करना एक बड़ा अनुभव रहा। एआई आपको तकनीकी मदद जरूर कर सकता है, लेकिन सच्चाई और विश्वसनीयता पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताकत हैं।सच्ची खबर की जगह कोई तकनीक नहीं ले सकती। पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताकत विश्वसनीयता है। समय के साथ मीडिया में माध्यम बदल रहे हैं, लेकिन पत्रकारिता का मूल सिद्धांत कभी नहीं बदलेगा। तकनीक सीखिए, लेकिन सत्य और विश्वसनीयता को पीछे मत छोड़िए।

इस तरह शुरू हुआ 'विकल्प'...

धर्मेंद्र भदौरिया ने अपने छात्र जीवन की याद साझा करते हुए 'विकल्प' की शुरुआत की कहानी बताई। उन्होंने बताया कि प्रायोगिक पत्र के नाम की बात आई, तो उनके दिमाग में यही नाम आया। इसकी वजह यह थी कि पत्रकारिता में आने से पहले वे अपने गाँव में इसी नाम का क्लब चलाते थे। सहपाठियों और गुरुजनों को भी यह नाम पसंद आया। इस तरह उनके बैच से 'विकल्प' समाचार-पत्र की शुरुआत हुई। काम करने का तरीका वही रखा गया, जैसा एक पेशेवर अखबार में होता है। इस दौरान समाचार लेखन, संपादन, साक्षात्कार, फील्ड रिपोर्टिंग, ले-आउट और पत्रकारिता की अन्य बारीकियों को समझने का शुरुआती अनुभव मिला। यह खुशी की बात है कि बाद के बैचों ने भी इसकी निरंतरता बनाए रखी।

आज के अतिथि

आठवां सत्र: प्रातः 10:30-12:00 बजे
वक्ता: सर्वश्री प्रकाश पंत, कृष्ण मोहन मिश्रा, अनिल पाण्डेय, मृत्युंजय कुमार झा, सचिन जैन

नवां सत्र: -1:30 बजे
वक्ता: सर्वश्री आशीष चौहान, आयुषी श्रीवास्तव, अमित कौसरवाल, डॉ. सुलभ सिंह, कविता कौसरवाल

समापन सत्र: 2:30-4:30 बजे
मुख्य अतिथि: श्री रजनीश अग्रवाल
माननीय सदस्य, राज्यसभा
वक्ता: सौरभ कुमार, संदीप रघुवंशी, अभिषेक बेहार, देवरूप आर्या, आशुतोष कुमार सिंह

रिपोर्टिंग चतुर्थ सत्रः अनुष्का पांडे (5 BAMC), महक केवट, टीना यादव, हिमांशु तिवारी (3 BAJCW)

अभ्युदय-2026 के विविध रंग

1 BScNM के छात्र प्रियांशु साहू ने कुलगुरु को उनका स्केच भेंट किया

एमसीयू के विद्यार्थियों के बीच 'गुल्लक' के राइटर दुर्गेश सिंह

मंच पर दिग्गजों की सीख, बाहर नई पीढ़ी का संवाद

सभागार की हर हलचल को कैमरे में उतारता छात्र

अभ्युदय की व्यस्तताओं के बीच सुकून भरे पल

'विकल्प' न्यूजरूम टीम के साथ कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी और लोकसभा सचिवालय के डिप्टी डायरेक्टर विकास नेमा

विद्यार्थी संपादक मंडल: रोशनी शर्मा, अभिषेक जाट, विनम्र तिवारी, सुप्रजा आर्या पांडेय, केवली जैन, केशव कुशवाह, हेमंत बम्होरिया **समन्वयक:** डॉ. राखी तिवारी
सलाहकार संपादक: प्रो. शिवकुमार विवेक, डॉ.लाल बहादुर ओझा, डॉ. ऋतु मिश्र, विनय श्री नेमा **रिपोर्टिंग समन्वयक :** रूबी सरकार
लेआउट: आकाश सैनी, अवनि सक्सेना, इशिता मुखोपाध्याय, शैलेश यादव

प्रधान संपादक: विजय मनोहर तिवारी
publication.mcu@gmail.com